अध्याय द्वितीय

सम्बन्धित साहित्य का पुनरावलोकन

अध्याय – द्वितीय

सम्बन्धित साहित्य का पुनरावलोकन

शिक्षण प्रक्रिया में अध्यापक की भूमिका सर्वोच्च है । शैक्षिक उद्देश्यों की प्राप्ति अध्यापक की कार्य कुशलता उसके व्यक्तित्व, शैक्षिक व्यवसाय के प्रति अभिवृत्ति आदि से प्रभावित होती है । छात्र कक्षा में अध्यापक के व्यवहार का अनुकरण करता है, उसके व्यक्तित्व से प्रभावित होता है तथा उसके निर्देशन में शैक्षिक कार्यों का सम्पादन करता है । अध्यापक की प्रवृत्तियाँ सीखने–सिखाने के वातावरण को प्रभावित करती है । इस सन्दर्भ में कई अध्ययन किये गये हैं, जिसमें यह देखा गया है कि अध्यापक का व्यवहार और व्यक्तित्व विद्यार्थी के व्यक्तित्व और व्यवहार को प्रभावित करता है क्योंकि छात्र अपने जीवन का एक बड़ा भाग इन विद्यालयों में व्यतीत करते हैं और यहाँ छात्र अध्यापक की अन्तःक्रिया का बहुत महत्व होता है । **ब्रूकोवर** – 1945, **एण्डरसन** – 1946 तथा **एप्रेस** – 1977 ने इस प्रकार के प्रभावों का अध्ययन किया है और इस तथ्य की पुष्टि की है कि अध्यापक की प्रवृत्तियों, व्यक्तित्व और व्यवहार का छात्रों पर धनात्मक प्रभाव पड़ता है ।

इस प्रकार से यदि पूर्वकालिक अध्ययनों एवं शोधों का विश्लेषण किया जाय

तो कई महत्वपूर्ण निष्कर्ष सामने आते हैं जो प्रस्तुत शोध–प्रबन्ध के चयन के लिए सहायक हैं । अध्ययन की सुविधा के लिए इन्हें दो भागों में विभाजित किया गया है --- एक भाग एवं दो भाग ।

भाग एक में नवाचारिकता से सम्बन्धित अध्ययनों एवं निष्कर्षों की व्याख्या प्रस्तुत की जा रही है तथा भाग दो में अध्यापक के महत्वाकांक्षा स्तर एवं सृजनात्मकता से सम्बन्धित अध्ययनों को प्रस्तुत किया जा रहा है ।

भाग – एक :

नवाचार और नवाचारिकता का अध्ययन वर्तमान शताब्दी के चौथे दशक से आरम्भ हुआ । इसका प्रसार और प्रचार कृषि, औषधि, वाणिज्य और औद्योगिकी से होता हुआ शिक्षण जगत् में पहुंचा । माइल्स की पुस्तक 'इनवेन्शन इन एजूकेशन (1964)' शिक्षा जगत् में नवाचारिकता से सम्बन्धित प्रथम पुस्तक है । नवाचार और नवाचारिकता प्रवृत्तियों को तीव्र सामाजिक परिवर्तन की स्थिति में एकमात्र ऐसा उपकरण पाया गया है, जो सन्तुलन बनाये रखने के लिए आवश्यक है । कई शोधकर्ताओं ने उन व्यक्तियों की खोज की जो नवाचारिक थे और उनके विभिन्न गुणों का अध्यन किया । (ग्रास – 1942), (लायन बरगर और काफेन आप्र 1957), (राहुटकर – 1961) इन्होंने अपने अध्ययन से यह निष्कर्ष निकाला कि कम आयु के व्यक्तियों में नवाचारिकता अधिक मात्रा में पायी जाती है । इसी प्रकार वे कुछ अन्य अध्ययन कर्ताओं ने पुरुषों को महिलाओं की अपेक्षा अधिक नवाचारिक प्रवृत्ति का पाया है । (कैपलव– 1954, लोटज – 1965, सिम्पसन – 1969 तथा तुल – 1970) । इसी प्रकार कुछ अन्य अध्ययन कर्ताओं, जैसे – हापर, स्टैमलैंड एवं शेपर्ड – 1960 और रहीम ने उच्च शैक्षिक योग्यता का सम्बन्ध नवाचारिक प्रवृत्ति से

पाया । **मार्स और कोलमन** – 1954, **काट्ज** – 1957, **रहीम** – 1961 ने नवाचारिक व्यक्तियों में "जनमत नेतृत्व" अधिक मात्रा में पाया । इसी प्रकार **माइल्स** (1973) ने नवाचारिक और अनवाचारिक अध्यापकों के व्यक्तित्व से सम्बन्धित गुणों का अध्ययन करने के बाद यह निष्कर्ष निकाला कि नवाचारिक और अनवाचारिक अध्ययन के गुणों में विभिन्नता पायी जाती है । **माइल्स** ने देखा कि नवाचारिक अध्यापक 20 से 29 वर्ष के आयु के होते हैं, बड़े शहरों में रहते हैं तथा अधिक वेतन पाते हैं या अधिक वेतन की आकांक्षा रखते हैं । **भोरा** (1983) ने शैक्षिक नवाचार की राष्ट्रीय विकास में भूमिका का अध्ययन किया और शैक्षिक नवाचार को राष्ट्रीय विकास के लिए महत्वपूर्ण पाया ।

अध्यापक के व्यक्तित्व, मनोवृत्ति और प्रशिक्षण का भी सम्बन्ध अध्यापक की नवाचारिकता से पाया गया है । **पीटरसन** (1984) ने अपने अध्ययन में यह पाया कि अध्यापकों को यदि प्रशिक्षित कर दिया जाय तो यह उनकी नवाचारिकता की प्रवृत्ति को प्रभावित करती है ।

स्टेडमन (1984) यह जानने का प्रयत्न किया कि अध्यापक की नवाचारों के प्रति दिलचस्पी का उसकी नवाचारिकता की प्रवृत्ति पर क्या प्रभाव पड़ता है और अपने अध्ययनों परान्त उसने यह पाया कि अध्यापक की दिलचस्पी एवं नवाचारों के अपनाने में सार्थक सम्बन्ध है । **मीन्स** (1983) ने यह जानने का प्रयास किया कि अध्यापक के व्यक्तिगत गुणों और परिस्थितियों की (इकोलॉजी) के विभिन्न तत्वों की नवाचारों के अपनाने में क्या भूमिका है ? उसने संगठन के वातावरण, विषय क्षेत्र तथा प्रत्यक्षात्मक स्तर का नवाचारों के अपनाने में इनके प्रभावों का अध्ययन किया । दूसरी तरफ हेज (1983) न उन संगठनात्मक तत्वों का अध्ययन किया जो शैक्षिक नवाचार को उपयोग में लाने और न लाने के बीच में

विभेद करता है । इस अध्ययन के अन्तर्गत विद्यालय के वातावरण के उन मूल तत्वों का अध्ययन किया गया, जिनके प्रयोग के माध्यम से शैक्षिक नवाचार को उपयोग में लाने वाले और शैक्षिक नवाचारों को उपयोग में न लाने वाले अध्यापकों को पहचाना जा सकता है ।

डिनो (1987) ने अध्यापक की लेखन के क्षेत्र में विकसित होने वाले क्रिया–कलापों में तथा अध्यापक के नवाचारों के उपयोग में सम्बन्ध का अध्ययन किया । **हुसेन** (1988) ने संकाय के नवाचारिक व्यक्तियों के विभागीय सहायता को प्रत्यक्षीकरण तथा निर्देशात्मक नवाचारों के अंगीकरण के सम्बन्ध का अध्ययन किया और यह पाया कि विभिन्न श्रेणियों के नवाचारिक व्यक्ति नवाचारों के प्रत्यक्षीकरण एवं अंगीकरण में भिन्न हुआ करते हैं । **एण्डरसन** (1987) ने एक कला महाविद्यालय का अध्ययन कर शैक्षिक नवाचारों और संगणक के उपयोग के सम्बन्ध का अध्ययन किया और पाया कि एक नवाचार के उपयोग के सम्बन्ध का अध्ययन किया और पाया कि एक नवाचार के उपयोग का सम्बन्ध इसकी सफलता पर आधारित होता है ।

इस प्रकार उपरोक्त अध्ययनों के आधार पर यह निष्कर्ष निकाला जा सकता है कि शिक्षा जगत् में नवाचारों के माध्यम से प्रगति और शिक्षा में एक सामंजस्य स्थापित किया जा सकता है । वहीं दूसरी तरफ कुछ विशेष प्रकार के व्यक्ति नवाचारों के प्रति शीघ्र ही उन्मुख हो जाते हैं ।

भारत में भी शैक्षिक नवाचार तथा नवाचारिक अध्यापकों के ऊपर काम किया गया है । यद्यपि कि नवाचार और नवाचारिकता के सम्बन्ध में कृषि के क्षेत्र में बहुत अधिक कार्य हुआ है । **पारिनय** ने अपनी निर्देशिका "वीहेकीयरल साइंस रिसर्च इन इण्डिया" में

1925 से 1955 के बीच लगभग 114 उन अध्ययनों का वर्णन किया गया है, जिसके माध्यम से नवाचारों को अपनाने और इनके प्रयास के विभिन्न स्तरों का अध्ययन किया गया है किन्तु **वुच** (1972) का प्रयास शैक्षिक नवाचारों के सन्दर्भ में प्रथम माना जा सकता है । जिसमें उन्होंने भारतीय विद्यालयों की उन दशाओं का अध्ययन किया है, जिसमें नवाचारिकता का विकास होता है । **राय** (1972) ने अध्यापकों के उन गुणों का अध्ययन किया जो शैक्षिक नवाचारों के प्रसार में सहायक होते हैं । इनमें नवाचारों के प्रति जागरुकता का समय, अपनाने का समय, अन्तर्राष्ट्रीयता और उनात्म–प्रत्यक्षात्मक परिवर्तन अधिमुखता प्रमुख थे । **जोशी** (1972) ने शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालयों में नवाचारों का अध्ययन किया और यह पाया कि इन विद्यालयों में बी.एड. पाठ्यक्रम की अवधि को बढ़ाने की प्रवृत्ति है । **भागिया** (1973) ने नवाचारों के प्रसार का उनके विशिष्ट गुणों के सन्दर्भ में तथा व्यक्ति के प्रत्यक्षीकरण के सम्बन्ध में अध्ययन किया । सिंह (1977) ने यह जानने का प्रयास किया कि विभिन्न आयोगों द्वारा प्रतिपादित नवाचारों को किस सीमा तक विभिन्न शिक्षण–प्रशिक्षण महाविद्यालयों ने अपनाया है । कुमार (1977) वाराणसी शहर के माध्यमिक स्तर के अध्यापकों को पहचानने के लिए एक उपकरण का निर्माण किया तथा इसके आधार पर नवाचारिक एवं अनवाचारिक अध्यापकों में विभेद कर उनके व्यक्तित्व की विभिन्नता का अध्ययन किया । **शुक्ला** (1984) ने प्राइमरी स्तर के नवाचारिक एवं अनवाचारिक अध्यापकों के व्यक्तित्व की विभिन्नता का अध्ययन किया तथा उनके छात्रों की सृजनात्मकता का तुलनात्मक अध्ययन किया । **श्री कृष्ण राम** ने (1986) में वाराणसी शहर के माध्यमिक स्तर के नवाचारिक एवं अनवाचारिक अध्यापकों की व्यावसायिक अभिवृत्ति का अध्ययन किया तथा यह पाया कि नवाचारिक अध्यापकों में अपने व्यवसाय के प्रति अधिक सकारात्मक अभिवृत्ति है ।

भाग दो :

महत्वाकांक्षा के स्तर के प्रत्यय को सर्वप्रथम **डेम्बो** (1971) में प्रतिपादित किया था । तब से लेकर आज तक कई शोधकर्ताओं ने महत्वाकांक्षा के स्तर का अन्य मनोवैज्ञानिक चरों के साथ तुलनात्मक अध्ययन किया है । हॉप ने 1930 में ही इस घटना का प्रयोगात्मक पद्धति से अध्ययन किया था । उसके इस अध्ययन ने उस समय के कई मनोवैज्ञानिकों को प्रभावित किया, जिसमें से **कुर्टलेविन** प्रमुख थे । **जकनत** (1937) ने अपने अध्ययन में यह पाया कि महत्वाकांक्षा का स्तर सफलता की भावना की तीव्रता के आधार पर और अधिक बढ़ जाता है और महत्वाकांक्षा की प्रवृत्ति असफलता की भावना के परिणाम स्वरूप और अधिक बढ़ जाती है । फेंक (1933) ने किसी किसी एक कार्य में महत्वाकांक्षा के स्तर का प्रभाव किसी दूसरे कार्य पर देखा । इसी के साथ उसने यह भी अध्ययन करने का प्रयास किया कि महत्वाकांक्षा के स्तर के विभिन्न पक्षों पर व्यक्तिगत विभिन्नता का क्या प्रभाव पड़ता है । 1939 में **गोल्ड** ने महत्वाकांक्षा के स्तर को प्रायोगिक रूप में विश्लेशित करने का प्रयास किया । **गोल्ड** और **कपलांग** (1940) ने महत्वाकांक्षा का शैक्षिक तथा व्यक्तित्व से सम्बन्धित तत्वों से सम्बन्ध स्थापित करने का प्रयास किया **सीयर्स** (1940) ने महत्वाकांक्षा के स्तर का सम्बन्ध शैक्षिक रूप से सफल बच्चों के सन्दर्भ में किया ।

राटॅर (1942) ने महत्वाकांक्षा स्तर के आधार पर व्यक्तित्व का अध्ययन करने का प्रयास किया । उसने इस क्षेत्र में कई अध्ययन किये और अपने अध्ययन से उसने यह निष्कर्ष निकाला कि व्यक्तित्व के गुणों में अस्थिरता व्यक्ति के महत्वाकांक्षा के स्तर को प्रभावित करता है । **फस्टिंगर** (1942) ने अपने अपने अध्ययन में इच्छा, उम्मीद

तथा समूह मानकों का महत्वाकांक्षा के स्तर पर क्या प्रभाव है ? इसका अध्ययन करने का प्रयास किया । **वायटर** ने महत्वाकांक्षा के स्तर में कार्य निष्पादन तथा पिछले कार्यों के मूल्यांकन में सह–सम्बन्ध स्थापित करने का प्रयास किया है और यह बताया कि इनमें आपस में सम्बन्ध है । (1944) में **लेविन** का महत्वाकांक्षा के स्तर पर महत्वपूर्ण पत्र प्रकाशित हुआ, जिसका कि तत्कालीन मनोवैज्ञानिक ने खुले दिल से स्वागत किया । **लेविन, डिम्बो, फस्टिंगर** तथा **सीयर्स** (1944) ने व्यक्तित्व के क्षेत्र के निर्माण में महत्वाकांक्षा के स्तर को किशोरों के व्यक्तित्व के समायोजन के सन्दर्भ में अध्ययन किया और यह पाया गया कि कुसमायोजित किशोर आकांक्षा के स्तर को कार्य निष्पादन के स्तर से नीचे रखते हैं । जबकि सुसमायोजित व्यक्ति अपने आकांक्षा के स्तर को निष्पादन के स्तर से थोड़ा ऊपर रखते हैं । इस प्रकार **हिमलगेट** (1947) ने सामान्य और मनोविकृति व्यक्तियों के महत्वाकांक्षा के स्तर का तुलनात्मक अध्ययन किया । **कलगमन** (1948) ने भावात्मक स्थिरता और महत्वाकांक्षा के स्तर के सम्बन्ध को निर्धारित करने का प्रयास किया । **वाल्टर** (1948) ने महत्वाकांक्षा के स्तर पर आयु तथा लिंग के प्रभाव का अध्ययन किया और इन्हें आपस में सम्बन्धित पाया ।

समर और **एडवर्ड** ने एक प्रयोग के माध्यम से, कक्षा के अन्दर छात्र छात्राओं के महत्वाकांक्षा के स्तर तथा अपने कार्य के स्वनुमान में सम्बन्ध स्थापित करने का प्रयास किया और अपने प्रयोगों के माध्यम से इन्होंने यह देखा कि डिसक्रियेन्सीस और महिलाओं में पुरुषों की तुलना में कम थी । (1949) में ही **वर्नालिज** ने महत्वाकांक्षा स्तर तथा "पिक्चर फ्रस्टेशन" के सम्बन्धों का अध्ययन किया । हॉप ने (1949) में धोखा देने के क्षेत्र में महत्वाकांक्षा के स्तर तथा वृद्धि के सम्बन्धों को देखने का प्रयास किया ।

मास्ट ने (1951) में कुछ ऐसे प्रौढ़ व्यक्तियों के व्यक्तित्व के अध्ययन के लिए महत्वाकांक्षा के स्तर का प्रयोग किया, जो हकलाते थे । वर्ट ने (1952) में "ए ड्रिनल कोर्टिकल" क्रियाओं को तथा तनाव के प्रक्रिया का अध्ययन किया । स्टिमन्स (1952) ने बाल अपराधी और सामान्य बालकों में कमियों का अध्यन महत्वाकांक्षा के स्तर के प्रयोग के माध्यम से किया ।

रिक्यूरी और डगलस ने समूह मापन के क्षेत्र में महत्वाकांक्षा के स्तर का उपयोग किया । **वूनर और रॉटर** (1953) ने जातीय अध्ययन के लिए महत्वाकांक्षा के स्तर का प्रयोग किया । **रिजमन** (1953) ने महत्वाकांक्षा के स्तर और सामाजिक वर्गों का मापन किया । महत्वाकांक्षा के स्तर तथा पर्याप्तता के अनुभव एवं आत्मस्वीकारोक्ति का अध्ययन **कोहिन** (1954) के द्वारा किया गया ।

पैथर्स्ट (1957) ने उपलब्धि अभिप्रेषण तथा महत्वाकांक्षा के स्तर का अध्ययन उस अवस्था में किया, जबकि व्यक्ति को सफलता और असफलता का अनुभव प्रयोगात्मक रूप से कराया गया । **मिसल** (1957) ने नीग्रो बाल अपराधियों तथा पब्लिक स्कूल के बालकों के महत्वाकांक्षा के स्तर का अध्ययन किया । चाइल्डस ने (1960) में व्यक्तित्व विभिन्नता तथा महत्वाकांक्षा के स्तर का व्यवसाय के चयन में अध्ययन किया । अमीरो (1967) ने महत्वाकांक्षा के स्तर का ज्ञान तथा भावात्मक तथ्यों पर आधारित व्यक्तित्व गतिशीलता से सम्बन्धित समस्याओं का अध्ययन किया ।

कोहनबर्ट (1969) ने बीसवीं शताब्दी के सन्दर्भ में महत्वाकांक्षा की भूमिका और आवश्यकता का अध्ययन किया और यह निष्कर्ष निकाला कि महत्वाकांक्षायें, (अ) जिनका

सम्बन्ध निर्धारित लक्ष्यों से होता है, (ब) इनका प्रदर्शन विशिष्ट आर्थिक व्यवस्था तथा संस्कृति से होता है और वे उन्हीं के माध्यम से प्रदर्शित होते हैं तथा (स) इनका सम्बन्ध व्यक्ति की प्रतीक्षाया तथा प्रतिनिधित्व से होता है तथा (द) इनका सम्बन्ध नगरीकरण, औद्योगीकरण और सूचनाओं के द्वारा होता । स्लोकन (1969) ने महत्वाकांक्षा के स्तर के अनुपात और शिक्षा के प्रति मैट्रिकुलेशन किये हुए व्यक्तियों के अभिवृत्ति का तुलनात्मक अध्ययन किया । सावेयर (1969) ने भिन्न संस्थाओं के अध्यापक प्रशिक्षणार्थियों के महत्वाकांक्षा के स्तर का अध्ययन किया और यह पाया कि विभिन्न संस्थाओं के प्रशिक्षणार्थियों की महत्वाकांक्षा के स्तर में भिन्नता थी । स्टैफर्ड (1970) ने गत्यात्मक क्रियाओं के सन्दर्भ में व्यक्ति की महत्वाकांक्षा के स्तर, आयु तथा लिंग के सार्थक प्रभाव का अध्ययन किया और यह पाया कि व्यक्ति की गत्यात्मक क्रियाओं से सम्बन्ध महत्वाकांक्षा के स्तर पर व्यक्ति की आयु तथा लिंग का प्रभाव पड़ता है । इसी प्रकार इलियट तथा इलियट (1970) ने यह पाया कि व्यक्ति का जन्म क्रम तथा दूसरे भाई बहनों की अवस्था का अन्तराल उसके महत्वाकांक्षा के स्तर का निर्धारक होता है ।

एस॰ के॰ (1972) ने यह जानने का प्रयास किया कि तीसरी और चौथी श्रेणी में अध्ययनरत छात्रों के स्वयं के प्रत्यय तथा महत्वाकांक्षा के स्तर में क्या सम्बन्ध है ? एन्डिइस्का (1973) ने प्रयोगात्मक रूप से यह जानने का प्रयास किया कि महत्वाकांक्षा के स्तर से जुड़ी हुई समस्या तथा आवासीय गृहों में रह रहे बच्चों के बीच क्या सम्बन्ध है ? उसने अपने अध्ययन में यह पाया कि जिप्सी बच्चे महत्वाकांक्षा के स्तर के निर्धारण में अन्य बच्चों की तुलना में अधिक कठोर होते हैं । सेलर (1973) ने बुद्धि अवरोधात्मक प्रवृत्तियों तथा महत्वाकांक्षा के स्तर और उपलब्धि पर आधारित व्यवहार का अध्ययन किया

और उसने देखा कि विभिन्न शिक्षण संस्थाओं के प्रशिक्षणार्थियों के महत्वाकांक्षा के स्तर में भिन्नता होती है ।

वेन्डर और **रूज** (1974) ने मैक्सिकन अमेरिकन और अंगोलियन समुदाय के लोगों की प्रजाति और वर्ग के आधार पर निम्न उपलब्धि और महत्वाकांक्षा के स्तर का अध्ययन किया तथा यह पाया कि प्रजाति की तुलना में सामाजिक वर्ग उनके शैक्षिक उपलब्धि और शैक्षिक महत्वाकांक्षा को ज्यादा प्रभावित करते हैं ।

डुने एलिएट और कार्लसन (1981) ने ग्रामीण युवकों के शैक्षिक और व्यावसायिक आकांक्षाओं में छात्र और छात्राओं का तुलनात्मक अध्ययन किया । छात्राओं ने अधिक आकांक्षाओं का प्रदर्शन किया और अपने व्यावसायिक आकांक्षा छात्रों की तुलना में अधिक थी । **बूक** (1981), **मेके** एवं **वेलर** (1982) ने महत्वाकांक्षा के स्तर के सम्बन्ध जीवन की संतुष्टि, पारिवारिक परिस्थिति सामाजिक आर्थिक स्थिति के साथ देखा ।

(1987) में **वेले** ने 27, अभिप्रेरणा से सम्बन्धित चरों का व्यवसाय के महत्वाकांक्षा पर अध्ययन किया, इसमें विशेष रूप से उसने लिंग के प्रभाव का अध्ययन किया, उसके प्रतिदर्श में अध्यापक और व्यवस्थापक सम्मिलित थे । **कुथरी** (1988) ने एथलीटो के "सेल्फ कन्सेप्ट लोकस आफ कन्ट्रोल" तथा महत्वाकांक्षा का उसके कार्य निष्पादन से सम्बन्ध निकाला और इन तीनों का सम्बन्ध उनके कार्य निष्पादन से स्थापित पाया गया । **लासर्न** (1988) ने मिशिगन प्रदेश के अध्यापकों एवं व्यवस्थापकों की व्यावसायिक अभिप्रेरणा और महत्वाकांक्षा का अध्ययन किया और यह पाया कि महत्वाकांक्षा का व्यावसायिक विकास में लिंग भिन्नता के साथ गहरा सम्बन्ध है ।

भारत में महत्वाकांक्षा के स्तर पर 1953 में **शशिकला सिन्हा** ने अध्ययन किया । उनके अध्ययन का उद्देश्य संस्कृति और महत्वाकांक्षा के सम्बन्धों का अध्ययन करना था । उन्होंने अपने अध्ययन में यह पाया कि महत्वाकांक्षा के स्तर पर संस्कृति का प्रभाव पड़ता है । (1960) के दशक में **मुथैया** ने महत्वाकांक्षा के स्तर पर कई अध्ययन किये । अपने एक अध्ययन में **मुथैया** ने महत्वाकांक्षा के स्तर का सम्बन्ध भग्नाशा के विभिन्न क्रियाओं के प्रतिरूपों से स्थापित किया । उसी समय सिंह और सिंह (1961) ने उत्तर प्रदेश के गाँवों में रहने वाले लोगों के महत्वाकांक्षा और भग्नाशा का अध्ययन किया, इसी समय **मुथैया** ने किशोरों के महत्वाकांक्षा और भग्नाशा का अध्ययन किया ।

(1966) में **मुथैया** ने ही अपने एक अध्ययन में नशे की दवा लेने वाले स्नायु दौर्बल्य से पीड़ित व्यक्ति और नशे की गोली न लेने वाले स्नायु दौर्बल्य के मरीजों के महत्वाकांक्षा स्तर का अध्ययन किया । (1967) में पेस्टन जी और अख्तर ने प्रौद्योगिकी और शिक्षक–प्रशिक्षण के विद्यार्थियों के व्यावसायिक मूल्यों, कार्य निष्पादन और आय की आकांक्षाओं का अध्ययन किया और पाया कि शिक्षक प्रशिक्षणार्थियों की आय से सम्बन्धित महत्वाकांक्षा का स्तर औद्योगिकीय के विद्यार्थियों की तुलना में कम थी । **मोहन्ती** ने 1973 में महत्वाकांक्षा के स्तर की सामान्य प्रवृत्ति का अध्ययन किया और पाया कि महत्वाकांक्षा के स्तर के निर्धारण में व्यक्ति के लिंग एवं व्यावसायिक आर्थिक परिस्थितियों का प्रभाव पड़ता है । **शुक्ला** (1977) में शिक्षण प्रशिक्षणार्थियों के महत्वाकांक्षा के स्तर का मापन करने के लिए "आंसपरी" नामक प्रशिक्षण का निर्माण किया और पाया कि शिक्षण प्रशिक्षणार्थियों के महत्वाकांक्षा का स्तर संचमित था ।

सिंह और कुमार (1980) ने स्नातक छात्रों के महत्वाकांक्षा, बुद्धि और

आकांक्षाओं का तुलनात्मक अध्ययन किया और यह पाया कि छात्राओं की महत्वाकांक्षा का स्तर छात्रों की तुलना में अधिक होता है । **डनियाल** और **शाहा** (1981) ने शिक्षण प्रशिक्षणार्थियों के महत्वाकांक्षा का अध्ययन किया और विशेष रूप से उन्होंने उसकी उपलब्धियों से इसका सम्बन्ध स्थापित किया । **भूषण प्रसाद** (1981) ने विद्यालय के अध्यापकों के महत्वाकांक्षा के स्तर का अध्ययन किया । **सुषमा जोशी** (1988) ने प्राइमरी विद्यालय में कार्यरत तथा कार्य करने की इच्छा रखने वाले शिक्षकों की अभिवृत्ति, मूल्य तथा महत्वाकांक्षा स्तर का अध्ययन किया ।

अध्यापक की कई तरह की भूमिकायें हैं, जैसे अपने व्यवहार को अपनी गतिविधियों पर आरोपित करता है । विशेषकर कक्षा–भवन में विद्यार्थियों के व्यवहार को बनाने में इस प्रकार उत्पन्न प्रभाव द्वारा प्रभावित करता है । इसका कारण यह है कि छात्र अपने जीवन का एक महत्वपूर्ण समय कक्षा भवन में व्यतीत कर देते हैं । यह पूर्णरूपेण स्वयं को समाज के संरचनात्मक परिवर्तन के साथ सहमत कर लेता है । यह पूरी तरह से भावात्मक और ज्ञानात्मक आकार का हिसाब रखता है । शिक्षा जो कि सृजनात्मक या क्रियात्मक चिन्तन के लिये एक प्रारम्भिक उद्दीपक है, को हमारे विद्यालयों में इसे तिरस्कृत किया जाता है । इस तथ्य को पूर्णतः भुला दिया गया है कि शिक्षा का मुख्य उद्देश्य, हर किसी प्रकार की बाधाओं को दूर करना है । जिससे कि अध्यापकों के सृजनात्मकता को प्रेरित किया जा सके और बढ़ाया जा सके । कुछ लोग इस सम्बन्ध में यह प्रश्न पूछ सकते हैं कि एक व्यक्तिगत अध्यापक का सृजनात्मकता के विकास में क्या महत्ता एवं प्रभावशीलता है ? यह एक आश्चर्य का विषय है कि क्या एक आदमी दूसरे को और अधिक सृजनात्मकता बना सकता है ? अधिकांश शोधार्थी जो कि सृजनात्मकता

के क्षेत्र में हैं, ने इस योग्यता के बारे में यह विचार दिये हैं --- जैसे – सृजनात्मक विचारों को उत्प्रेरित करना, सुयोग्य अध्यापक द्वारा इसे उत्साहित किया जा सकता है । ठीक उसी प्रकार सुयोग्य शैक्षिक अध्यापक द्वारा सीखने को भी प्रोत्साहित किया जा सकता है । **रूजल** – 1956, **हिलगर्ड** – 1959, **सचमन** – 1961, **टूमिन** – 1962, **परनेश**–1963, **टोरंको** – 1962–64, **थामस** और **वर्क** – 1980 । इन सभी में एक हल्का सम्बन्ध है, पुनः इस बात को निर्देशित किया गया है कि शिक्षक का क्या प्रभाव पड़ता है, सामान्य अध्यापकों का नहीं; बल्कि विशिष्ट अध्यापकों का क्या प्रभाव पड़ता है ? इसको देखा गया । विशिष्ट अध्यापकों के योगदान का कई अनुसंधानकर्ताओं द्वारा अध्ययन किया गया ।

होवेलमैन (1957), **वर्केन** (1960), **टोरंको** (1960) और **बेसल** (1961) ने देखा कि सृजनात्मक अध्यापकों में उच्च संवेदनशीलता साधन सम्पन्न लचीले लक्ष्य प्राप्ति की इच्छा और मेधावी व सृजनात्मक व्यक्तियों से अच्छे सम्बन्ध होते हैं । **सगयूडिना** (1963) ने अपने एक अध्ययन में पाया कि दो अध्यापक यह प्रदर्शित करते हैं कि दोनों के लचीलेपन और मौलिकता में अन्तर है । **टेनविलियम** (1974) ने पाया कि उच्च सृजनात्मक समूह के छात्राध्यापक, अधिक मौलिकता, अधिक सरलतायुक्त और अधिक लचीलेपन से शिक्षण अधिगम का कार्य करते हैं । ठीक इसी प्रकार का परिणाम **मिलग्राम** और **फेलडम** (1979) में प्राप्त किया । सृजनात्मकता अध्यापक की प्रभाविता का भविष्य वक्ता है और उन्होंने पाया कि कक्षा–भवन में एवं कक्षा–भवन के बाहर छात्रों की सृजनात्मक गतिविधियों, शिक्षण की प्रभाविता से उच्च स्तर पर सह सम्बन्धित है ।

कई अनुसंधानकर्ताओं द्वारा सृजनात्मक व्यक्तियों के (वयस्क और बच्चों)

गुणों को सीखने के लिए अनुसंधान किये गये । यह अध्ययन गेरजल और जैक्शन (1962) द्वारा हाईस्कूल के बच्चों पर किया गया, उन्होंने पाया कि ये बच्चे, उच्च सृजनात्मक बच्चों के गुणों, उनकी क्रिया–कलापों सम्बन्धी महत्वपूर्ण सूचनाओं की जानकारी रखते हैं । **मैकिनन** (1962) ने पाया कि माता–पिता सृजनात्मक बच्चों के प्रति अक्सर सहानुभूति को प्रदर्शित करते हैं और उन्हें अनुपयोगी स्वतन्त्रता को प्रदान करते हैं व अवयस्कों को सृजनात्मक क्रियाओं के लिए प्रोत्साहित करते हैं । **पार्नस** (1963) ने ज्ञात किया कि सृजनात्मक बच्चों को पढ़ाना आसान कार्य नहीं है ।

हेलमैन (1963) ने सृजनात्मकता के प्रेरणा को बढ़ाने के लिए कई आवश्यक एवं पर्याप्त दशाओं की पहचान की । **वोगिलविक** (1974), **ब्रेंच** (1974), **हनसन** (1974) **मेमर्मिक** (1978) ने कक्षा–भवन और इसके वातावरण का बच्चों के सृजनशीलता पर क्या प्रभाव पड़ता है ? का अध्ययन किया और परिणाम प्राप्त किया, कक्षा–भवन का वातावरण बालक के सृजनशीलता पर प्रभाव डालता है । **फोरमैन** (1974) ने प्रारम्भिक स्कूल के बच्चों पर उनके सामाजिक आर्थिक प्रतिष्ठा का अध्ययन किया और पाया कि उच्च परिस्थिति से आने वालों का सृजनात्मक अंक निम्न वर्ग से आने वाले बच्चों की अपेक्षा अधिक था, **थामस और वर्क** (1981) ने कई तरह के स्कूल वातावरण का बच्चों के विकास पर क्या प्रभाव पड़ता है, का अध्ययन किया और पाया कि इसका बच्चों के औपचारिक एवं अनौपचारिक शिक्षण के मध्यस्थ की भूमिका हो और इससे सृजनात्मकता में अधिक विकास होता है । **लिकरमैन** (1973) ने "माइल प्रतिष्ठा" को बच्चों के सृजनात्मक व्यवहार को प्रभावित करने वाला एक कारक माना । इस प्रकार यह निष्कर्ष निकाला जा सकता है कि एक विशिष्ट प्रकार का व्यक्ति सृजनात्मकता को प्रभावित कर सकता है । शिक्षक की

सृजनशीलता और इसके सम्बन्धों का छात्र की सृजनात्मकता के साथ क्या सम्बन्ध है और परिणाम प्राप्त हुआ कि उच्च सृजनशीलता शिक्षक अपने छात्रों के सृजनशीलता को उत्तेजित करते, यानी बढ़ा देते हैं ।

उपरोक्त तमाम अध्ययनों का विश्लेषण करने के बाद यह निष्कर्ष निकलता है कि नवाचारिक और अनवाचारिक अध्यापकों के महत्वाकांक्षा स्तर एवं सृजनात्मकता का तुलनात्मक अध्ययन पूर्वाञ्चल विश्वविद्यालय के सन्दर्भ में कोई अध्ययन नहीं किया गया है । अध्ययनों के अवलोकन से यह भी पता चलता है कि नवाचारिक अध्यापक कुछ विशेष प्रकार के प्रवृत्ति के होते हैं और उनकी व्यावहारिक पद्धति में भिन्न पायी जाती है । अतः इस प्रकार के अध्यापकों की महत्वाकांक्षा स्तर एवं सृजनात्मकता किसी विशेष प्रकार के कार्य के निष्पादन में किस प्रकार का होता है ? यह जानने के लिए प्रस्तुत अध्ययन किया जा रहा है ।

-*******-